Natural

I was watching the lovely story standing at the Garia station.
The old lady must be in her eighties,
Four and a half or five years old a granddaughter-
The old lady from the pile of garbage by the side of the rail line,
Is finding plastic tea cups.
The granddaughter is putting them in the bag.
I don't know what will they do with the cups-
After collecting these cups for the whole day.
Earning five or ten rupees from them is also very hard;
But still, relentlessly they are stirring the wastes.
How unimaginable poverty has embraced them tightly!
Grandma is kneeling down and stirring the garbage to find out cups,
The five year old toddler has risen up on grandma's back-
Grandma is frequently swinging her on her back,
And searching cups in the garbage.
God knows what story is she murmuring -
Maybe the story of flying horses,
Colorful birds,
The little child has slept off embracing the neck long time ago:
The nature has overflown her love for them.
To whom the Almighty doesn't provide rice and bread,
Measures the cloth to cover shame,
He gives them peace of mind enormously-
Pours all the love for them-
They would've lost all hope if they didn't get that much:
Rising on grandma's back, hugging her neck,
Listening to the story of flying horses,
The child sleeps off;
Leaning downwards, grandma searches for the plastic cups
From the piles of garbage.
By her side, with smiling faces,
The white, red and blue forest flowers
Have bloomed in the bushes -
They are submerged in the intense touch of love.

প্রাকৃতিক

গড়িয়া স্টেশনে দাঁড়িয়ে স্পষ্ট দেখছিলাম অপূর্ব গল্পটি।
বুড়িমার বয়েস আশির কোটায় হবে
সাথে চার পাঁচ বছরের নাতনি,
বুড়িমা রেললাইনের ধারে ময়লার ঢিপি থেকে
প্লাস্টিকের চায়ের গ্লাস খুঁজে খুঁজে বের করছে,
নাতনি গ্লাসগুলো বস্তায় ভরে নিচ্ছে।
কি হবে কে জানে এই গ্লাসগুলো দিয়ে?
সারাদিন এই গ্লাস জড়ো করে
তার থেকে পাঁচ দশ টাকা উপার্জন করাও ভীষণ কঠিন কাজ
অথচ নির্বিকার চিত্তে ওরা দুজন ময়লা ঘাঁটছে।
কি ভীষণ দারিদ্র আষ্টেপৃষ্টে বেঁধে রেখেছে এদের ভাবা যায়?
ঠাকুমা হাঁটু গেড়ে বসে ময়লা ঘাঁটছে চায়ের কাপের খোঁজে
পাঁচ বছরের নাতনি পিঠে চেপে বসেছে ঠাকুমার।
ঠাকুমা থেকে থেকে নাতনিকে দোলা খাওয়াচ্ছে
আর ময়লা ঘাঁটছে চায়ের কাপের খোঁজে
বিড়বিড় করে কি গল্প বলছে কে জানে?
হয়ত পক্ষীরাজের ঘোড়ার গল্প
ব্যঙ্গমা ব্যঙ্গমী,
নাতনি গলা জড়িয়ে ধরে পিঠের মাঝখানে ঘুমিয়ে পড়েছে কখন!
প্রকৃতি ভালোবাসা উজাড় করে দিয়েছে ওদের।
বিধাতা যাদের পেটে ভাত দেয় না, রুটি দেয় না,
লজ্জা ঢাকবার কাপড় দেয় মেপে,
তাদের জন্যে শান্তি দেয় উজাড় করে
ভালোবাসা দেয় দুহাত ভোরে,
ওটুকু না পেলে ওদের বাঁচার সব পথ বন্ধ হয়ে যেতো।
ঠাকুমার পিঠে চেপে গলা জড়িয়ে
পক্ষীরাজ ঘোড়ার গল্প শুনতে শুনতে
ঘুমিয়ে পড়ে শিশু,
ঠাকুমা নিচু হয়ে প্লাস্টিকের গ্লাস খুঁজে ফেরে
ময়লার স্তূপে স্তূপে,
পাশে পাশে হাসিহাসি মুখে
সাদা লাল নীল বুনো ফুল
ফুটে আছে ঝোপে ঝাড়ে
ছুঁয়ে আছে ওদের ভালোবাসার নিবিড় স্পর্শে।

प्राकृतिक

गाड़िया स्टेशन के पास साफ़ देख रहा था वह अद्भुत कहानी।
बूढ़ी माँ की उम्र अस्सी के ऊपर होगी।
साथ में साढ़े पांच साल की पोती,
बूढ़ी माँ रेल लाइन के किनारे कचड़े के डिब्बे से
प्लास्टिकसे बने चाय के गिलासों ढूंढ निकाल रही है ,
पोती गिलासों को बस्ते में भर रही है।
पता नहीं क्या होगा इन गिलासों से
दिनभर में इन गिलासों को इकठ्ठा करके कितने पैसे मिलेंगे ?
लेकिन निर्लिप्त होकर दोनों कचड़े उठाते हैं।
क्या भीषण दरिद्रता ने इन्हे घेर कर रखा है,क्या कोई सोच सकता है ?
दादी घुटने टेक कर बैठकर चाय के कप में से कचड़े उठा रही है।
उनके पीठ पर चढ़कर बैठती है, पांच साल की पोती।
दादी बार बार पोती को झुलाती है।
फुस्फुस कर क्या कहानी सुना रही है,
शायद पक्षीराज घोड़े की कहानी,
पक्षियों की कहानी,
पोती कभी दादी के गले से लगकर कहानी के बीच में ही सो जाती है।
प्रकृति उनपर स्नेह बरस रही है ।
भगवन जिन्हे भोजन नहीं देते, रोटी नहीं देते,
शर्म ढकने के लिए मापकर देते हैं कपडे,
उनके लिए शांति बरसा देते हैं।
दोनों हाथों से प्यार देते हैं।
वो भी अगर न हो के सारे रास्ते बंद हो जाते।
दादी के पीठ पर बैठ गले से लगी,
पोती पक्षीराज घोड़े की कहानियां सुनते सुनते सो जाती हैं।
दादी झुककर प्लास्टिक के गिलासों को ढूंढ़ती फिरती हैं ,
कचड़े के डिब्बों में,
आसपास मुस्कुराते हुए,
सफ़ेद,लाल,नील जंगली फूल,
खिले हैं झोपड़ियों में,झाड़ियों में,
उनके स्नेह और प्यार भरे स्पर्श में।